B - 4
L - 22
Indian Society

संयुक्त परिवार में आधुनिक परिवर्तन

(1) भूमिका :-

- भारतीय परिवार के रूप में संयुक्त परिवार का तात्पर्य.....
- आधुनिकीकरण के वर्तमान दौर में भारतीय परिवार के संरचना एवं प्रकार्यों में काफी बदलाव आया है; जैसे-

⇓

आधुनिक परिवर्तन

(1) संरचना में परिवर्तन

- एकाकी परिवार का उद्भव
- नवस्थानीय परिवार की संख्या में वृद्धि
- मुखिया की सत्ता का विकेन्द्रीकरण
- निर्णय प्रक्रिया में अन्य परिवारजनों की सहभागिता में वृद्धि
- स्त्रियों की आर्थिक निर्भरता में कमी एवं प्रास्थिति में सुधार

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

- अवसरों एवं पुरस्कारों का वितरण परिवार के बजाए वैयक्तिक गुणों के आधार पर
- संयुक्तता की भावना के विस्तार क्षेत्र में कमी।

(b) अन्त: पारिवारिक संबंधों में परिवर्तन

- माता-पिता एवं बच्चों के संबंध समानतायुक्त एवं मित्रवत
- बच्चों द्वारा माता-पिता के निर्णयों का विरोध प्रारंभ
- पति-पत्नी के मध्य निकटता में वृद्धि एवं संबंधों में समानता का विकास
- सास की सत्ता में कमी एवं बहू की स्वतंत्रता में वृद्धि (कहीं कहीं सास पर बहू भारी)

(c) प्रकार्यों में परिवर्तन :-

1. यौन संबंध के नियमनकर्ता के रूप में परिवार के महत्व में कमी
2. पीढ़ी की गहरायी कम होने, बच्चों द्वारा अधिकतर समय घर से बाहर बिताने तथा संचार साधनों के विकास के कारण

सामाजीकरण की एजेंसी के रूप में परिवार के महत्व में कमी।

- नातेदारों के प्रति परिवार की भूमिका में कमी
- मनोरंजन की अन्य सुविधाओं / संस्थाओं के उद्भव से इस क्षेत्र में परिवार के महत्व में कमी
- लोककल्याणकारी राज्य एवं NGO की बढ़ती भूमिका के कारण सदस्यों के सामाजिक-आर्थिक सुरक्षा संबंधी प्रकार्यों में कमी।

(d) अन्य परिवर्तन

- विघटित परिवारों की संख्या में वृद्धि।
- पुत्र द्वारा अपने माता-पिता से अलग रहने की प्रवृत्ति में वृद्धि।
- माता-पिता भी पुत्र से अलग रहने की ओर उन्मुख
- द्विपक्षीय नातेदारी प्रचलित एवं परिवार में मातृ पक्ष के प्रभाव में वृद्धि।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

- भारत में भी LIR का प्रचलन एवं बिना विवाह निर्माण की प्रवृत्ति में वृद्धि।
- हाल में पश्चिमी देशों के तर्ज पर, भारत में भी समलैंगिक संबंधो को मान्यता देने से, Gay / Lesbian Marriage & Family की संभावना में वृद्धि।

(e) मूल्यांकन एवं निष्कर्ष

- उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि आज भारत में संयुक्त परिवार के संरचनात्मक एवं प्रकार्यात्मक पक्षों में तीव्र परिवर्तन हुआ है

इस बदलाव की दिशा निश्चित रूप से एकाकी परिवार की ओर है।

परन्तु यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि आज मुख्यतः संयुक्त परिवार के गृहस्थी के आयाम में परिवर्तन हुआ है, जहाँ यह एक से अधिक गृहस्थी में बंट गया है और आकार छोटा हुआ है।

परन्तु अलग रहते हुए भी यह एकाकी परिवार, संयुक्तता की भावना के आधार पर एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

हिन्दू विवाह एवं संयुक्त परिवार में परिवर्तन के कारण :-

- आधुनिकता के मूल्यों का प्रसार।
- आधुनिक शिक्षा का प्रसार। (आधुनिक)
- लोकतांत्रिक राज्य द्वारा निर्मित कानून एवं विकास योजनाएँ।
- औद्योगीकरण एवं नगरीकरण।
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकीय विकास।
- यातायात एवं संचार साधनों का विकास
- कोविड-19 महामारी

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

भारत में विवाह एवं परिवार पर वैश्वीकरण का प्रभाव :-

- आर्थिक सम्बन्धों के साथ-साथ सामाजिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्धों के वैश्विक विस्तार की प्रक्रिया को वैश्वीकरण की संज्ञा दी जाती है जिसकी शुरूआत मुख्यतः 1991 के आर्थिक सुधार के साथ हुई और इसने भारतीय समाज के साथ-साथ विवाह एवं परिवार व्यवस्था को प्रभावित किया है जिन्हे दो वर्गों में रखकर देखा जा सकता है-

(i) सकारात्मक प्रभाव
(ii) नकारात्मक प्रभाव

(1) नकारात्मक प्रभाव-

- वैश्वीकरण - उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रसार फलतः महत्वाकांक्षा एवं व्यक्तिवादिता में वृद्धि -

फलतः संयुक्तता की भावना कमजोर; संयुक्त परिवार का विघटन; विवाह विच्छेद की दर में वृद्धि ; एकाकी वैवाहिक जीवन तथा सिंगल पैरेंट फैमिली का विकास।

- वैश्वीकरण- एक तरफ महिलाओं की आत्मनिर्भरता, स्वतंत्रता एवं स्वच्छंदता में वृद्धि।

दूसरी तरफ पुरूषों पर पितृसत्तात्मकता के प्रभाव की निरंतरता।

⇓

पितृसत्तात्मकता के प्रभाव की निरंतरता फलतः स्त्री पुरूष के मध्य टकराव और विवाह विच्छेद एवं तनाव में वृद्धि।

- वैश्वीकरण- पाश्चेमी संस्कृति का प्रसार एवं बाजार अर्थव्यवस्था का विकास

⇓

फलतः विवाह के नए स्वरूपों (लिविंग रिलेशनशीप, समलैंगिकता आदि) का उद्भव; बिना विवाह परिवार का निर्माण, विवाह का बाजारीकरण; यौन सम्बन्धों में खुलापन आदि का प्रचलन

- वैश्वीकरण- व्यस्तता में वृद्धि के साथ-साथ बाजार अर्थव्यवस्था का विकास

⇓

फलतः बच्चों के पालन पोषण एवं सामाजीकरण में, वृद्धों की देखभाल में

परिवार की भूमिका में कमी और इसके नवीन विकल्पों (क्रेच, किंडर गार्डेन, वृद्धाश्रम आदि) का उद्भव

सकारात्मक प्रभाव :-

- वैश्वीकरण - रोजगार के अवसरों में वृद्धि के साथ व्यक्ति की आत्मनिर्भरता में वृद्धि और आधुनिकता के मूल्यों का प्रसार -

फलत: परिवार में मुखिया की सत्ता विकेन्द्रित; महिलाओं की स्थिति में सुधार; जीवन साथी के चुनाव में लड़का-लड़की के महत्व में वृद्धि; विवाह संबंधी निषेध कमजोर तथा अंतर्जातीय विवाह, सगोत्र विवाह एवं प्रेम विवाह में वृद्धि

- वैश्वीकरण - आधुनिकता के मूल्यों का प्रसार एवं तार्किक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास

⇓

फलत: विवाह एवं परिवार सम्बन्धों में

स्वतंत्रता एवं समानता की दिशा में परिवर्तन; विवाह एवं परिवार से संबंधित नियमों एवं प्रथाओं का तार्किकीकरण

फलत: बाल विवाह, विधवा विवाह निषेध जैसी मान्यताएँ कमजोर और विवाह से जुड़ी अतार्किक प्रथाओं / रूढ़ियों का उन्मूलन

- वैश्वीकरण- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का तीव्र विकास

फलत: विवाह में आधुनिक तकनीक का प्रयोग; प्रजनन में नवीन तकनीक का प्रयोग (Surrogacy, Test Tube baby आदि); विवाह के नवीन निषेध (Blood group) का प्रचलन और परिवार में आधुनिक तकनीक के प्रयोग द्वारा महिलाओं के भूमिका द्वंद में कमी और महिलाओं द्वारा बाहरी कार्यों का सफलतापूर्वक संचालन संभव